PPST

Patriotic People-oriented Science and Technology Group

Corresponding Members

Ashok Jhunjhunwala
Padma Shri
Institute Professor,
IIT Madras

J. K. Bajaj
Director,
Centre for Policy Studies

A. V. Balasubramanian
Director, CIKS, Chennai

N. Ballal
Fmr. Professor, IIT Bombay

Darshan Shankar
Padma Shri
VC, TDU, Bengaluru

P. L.T. Girija
Founder, Sanjeevani
Ayurveda Vaidyasala,
Chennai

Gita Dharampal
Fmr. Professor, Heidelberg;
Dean, Gandhi Research
Foundation, Jalgaon

L. Kannan
Entrepreneur,
IIT-M Research Park

C. N. Krishnan
Fmr. Professor,
MIT-AU, Chennai

T. M. Mukundan
Founder, Sanjeevani
Ayurveda Vaidyasala,
Chennai

Rajeev Sangal
Fmr. Founder-Director,
IIIT, Hyderabad

G. Sivaramakrishnan
Fmr. Professor, Bangalore
University, Bengaluru

M. D. Srinivas
Chairman,
Centre for Policy Studies

Sunil Sahasrabudhey
Fmr. Faculty, Gandhian
Institute, Rajghat; and,
Founder, Vidya Ashram,
Saranath, Varanasi

J. K. Suresh
Fmr. VP Infosys,
Bengaluru

Website
www.ppstindiagroup.in
E-mail:
ppstindiagroup@gmail.com

अगस्त १६, २०२१

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी,

कोविड-१९ के प्रतिरोध एवं चिकित्सा के लिये देशज चिकित्सा पद्धतियों के पूर्ण एवं प्रभावी उपयोग की व्यवस्था करने का आग्रह करने हेतु मैं पी.पी.एस.टी. समूह की ओर से एक विनति-पत्र प्रेषित कर रही हूँ। कोविड काल में भारत सरकार, कतिपय राज्य सरकारों एवं देशभर में अगणित वैद्यों ने निजी स्तर पर कोविड की रोकथाम एवं उपचार के लिये देशज पद्धतियों पर आधारित अनेक व्यापक एवं सफल प्रयास किये हैं। इस विनति-पत्र से हम आपसे आग्रह करते हैं कि ऐसे प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए इन्हें भारत की चिकित्सा व्यवस्थाओं में समुचित एवं औपचारिक स्थान देने के प्रबंध किये जायें।

इस पत्र पर ६८२ व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किये हैं। इनमें से प्रायः ३०० देशज पद्धतियों के चिकित्सक हैं। ये अनेक राज्यों से हैं और इनमें से अधिकतर देश के छोटे-छोटे उपनगरों में राजकीय अथवा निजी स्तर पर चिकित्सा-सेवाएँ उपलब्ध करवा रहे हैं और इनमें ४६ तमिलनाडु की सिद्ध पद्धति के वैद्य हैं। अनेकों का अपने दैनिक चिकित्साकार्य में कोविड रोगियों की चिकित्सा देशज पद्धतियों से करने का अनुभव है।

चिकित्सकों से इतर २१० विज्ञान, प्राद्यौगिकी एवं अभियांत्रिकी विधाओं के पी.एच.डी. हैं इस विनति-पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं।

हस्ताक्षर करने वालों में ३ पद्मभूषण एवं ११ पद्मश्री से सम्मानित हैं। अनेक अपने-अपने कार्यक्षेत्र के मान्य अग्रणी हैं। इनमें से कुछ देश के प्रमुख संस्थानों के वर्तमान अथवा निवृत्त निर्देशक अथवा विशिष्ट प्राध्यापक हैं, अन्य भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के सचिव जैसे पदों पर रहे हैं।

इन सब लोगों से विनति-पत्र के प्रति जिस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हमें प्राप्त हुई हैं उनसे लगता है कि देशज चिकित्सा पद्धतियों को जोड़कर देश में एकीकृत चिकित्सा प्रणाली की स्थापना के पक्ष में अब देश में बहुत गहन भाव व्याप्त है। यह भाव महामारी के इस काल में और गहन हुआ है।

इस विनति-पत्र के प्रणेता पी.पी.एस.टी. समूह की स्थापना १९८० के दशक में मुख्यतः विज्ञान, प्राद्यौगिकी एवं अभियांत्रिकी से जुड़े कुछ युवा अध्येताओं ने भारत के विज्ञान-प्राद्यौगिकी को अधिक कार्यक्षम एवं भारत के लोगों की दैनंदिन की समस्याओं के समाधान के प्रति अधिक सचेत बनाने की दृष्टि से की थी। इस पर विचार करते हुए यह समूह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भारतीय विज्ञान-प्राद्यौगिकी को कार्यक्षम एंव भारत की समस्याओं के प्रति सचेत बनाने के लिये विभिन्न विधाओं में भारत की विज्ञान-प्राद्यौगिकी की परंपराओं का अध्ययन करना और उन्हें अपनी आज की प्रणालियों में उपयुक्त स्थान देना आवश्यक है। पिछले चार दशकों में इस समूह से जुड़े अनेक अध्येताओं ने विज्ञान-प्राद्यौगिकी की देशज परंपराओं के इतिहास, ज्ञान-पद्धति एवं वर्तमान में उनकी व्यापकता पर गहन एवं उल्लेखनीय अध्ययन किया है।

विनती पत्र पर अपनी सहमति जताने वाले हस्ताक्षरकर्ताओं की पूरी सूचि इस विनती पत्र के साथ संलग्न है। हमें विश्वास है कि आप हमारी इस विनति को स्वीकार करेंगे और आयुष की देशज पद्धतियों को समुचित एवं औपचारिक स्थान देते हुए भारत में एकीकृत चिकित्सा प्रणाली की स्थापना करेंगे।

सादर प्रणाम,

भवदीय,

पी.एल.टी. गिरिजा
संजीवनी आयुर्वेद वैद्यशाला
१/१३४ गंगैअम्मन् कोविल् तेरु
इञ्जम्बाक्कम्, चेन्नै ६००११५
मो: ९५००० ७१३३२, ई-मेल: *pltgirija@gmail.com*